विद्याश्री-न्यास

(पं. विद्यानिवास मिश्र एवं
श्रीमती राधिका देवी की स्मृति में स्थापित)

स्थापना–वर्ष : 2006

सारस्वत यात्रा : वर्ष 2025

पं. विद्यानिवास मिश्र जन्मशती समारोह (2025-26)

पं. विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में उनके जन्मदिवस (14 जनवरी) के अवसर पर 'विद्याश्री' न्यास द्वारा वर्ष 2006 से प्रतिवर्ष राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है, जिसमें किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर विभिन्न सत्रों में विचार-गोष्ठियों के साथ ही कवि गोष्ठी एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं। वर्ष 2009 से राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ ही भारतीय लेखक-शिविर की संरचना तथा 2020 से विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान भी जुड़ गया है। इस सांवत्सर आयोजन में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए कवियों, लेखकों, कलाकारों को विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान, लोककवि सम्मान, राधिका देवी लोककला सम्मान, श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान और पत्रकारिता सम्मान से अलंकृत किया जाता है।

विद्याश्री न्यास के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि इस सारस्वत आयोजन में पूरे देश से रचनाकारों, चिंतकों, अध्येताओं एवं शोधार्थियों की भागीदारी की एक समृद्ध परम्परा विकसित हो सकी है, साथ ही समय-समय पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, प्रयागराज एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों का सहयोग न्यास को मिलता रहा है। इस शृंखला में अब तक 'आज का समय और साहित्य', 'संस्कृति और समन्वय', 'पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति संवाद', 'भाषा, शिक्षा एवं संस्कृति', 'आधुनिक हिन्दी कविता', 'इतिहास, परम्परा और आधुनिकता', 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय', 'नारी चेतना और हिन्दी साहित्य', 'जयशंकर प्रसाद : सृजन यात्रा', 'हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध', 'कथेतर हिन्दी गद्य : परम्परा और प्रयोग', 'हिन्दी भाषा की परम्पराएँ : प्रयोग और संभावनाएँ', 'शिक्षा, दर्शन और समाज : प्रासंगिक विमर्श के प्रमुख आयाम', 'गांधी और हिन्दी सृजन-संदर्भ', 'भारत में भाषा-चिंतन की परम्पराएँ' तथा 'प्रमुख भारतीय भाषाएँ : समकालीन प्रवृत्तियाँ', 'मध्यकालीन हिन्दी कविता : अवधारणाओं का पुनराविष्कार' तथा 'हिन्दी साहित्य का उदय काल : विन्यास और संवेदनाएँ' आदि विषय पर राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी/वेबिनार एवं भारतीय लेखक शिविर सम्पन्न हो चुके हैं। इन संगोष्ठियों/व्याख्यानों एवं पं. विद्यानिवास मिश्र की रचनाओं तथा उनके रचनाकर्म से सम्बंधित विषयों पर 50 से अधिक पुस्तकें वाणी प्रकाशन, दिल्ली; सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली; प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली; हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, प्रयागराज; उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ; राका प्रकाशन, प्रयागराज; प्रलेक प्रकाशन, मुम्बई एवं सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित हुई हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर : विद्याश्री न्यास के सांवत्सर उपक्रमों में से एक पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक शिविर 14-15 जनवरी, 2025 'हिंदी उपन्यासों की कथाभूमि' पर केन्द्रित था। यह वर्ष पंडित जी का जन्मशताब्दी वर्ष होने के कारण विशेष महत्त्वपूर्ण है और इस आयोजन के साथ ही न्यास द्वारा संकल्पित वर्ष पर्यन्त चलने वाले विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक उत्सवों-समारोहों का भी श्रीगणेश हुआ।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' (आयुष राज्यमंत्री, स्वतंत्र प्रभार, उत्तर प्रदेश), अध्यक्ष प्रो. सुनील कुलकर्णी (निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा), विशिष्ट अतिथियों में प्रो. आनंद कुमार त्यागी (कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ), श्री धर्मेन्द्र सिंह (सदस्य, विधान परिषद, उ.प्र.), डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र तथा डॉ. अरुणेश नीरन थे। बीज वक्तव्य प्रो. सदानन्द शाही ने दिया। सत्र का संयोजन डॉ. प्रकाश उदय ने किया।

दूसरे अकादमिक सत्र का उपविषय 'हिंदी उपन्यासों की कथाभूमि : स्वतंत्रतापूर्व' था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. विश्वास पाटील ने की तथा डॉ. श्रुति पाण्डेय, डॉ. प्रभात मिश्र, प्रो. वशिष्ठ अनूप, प्रो. बलराज पाण्डेय ने विषय पर महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिये। संयोजन

डॉ. प्रीति जायसवाल ने किया। तीसरा अकादमिक सत्र 'हिंदी उपन्यासों की कथाभूमि : स्वातंत्र्योत्तर दशक' प्रो. चितरंजन मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. कुमार वरुण, डॉ. मधुबाला शुक्ल, डॉ. नरेन्द्रनाथ राय, डॉ. रंजन पाण्डेय, प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी तथा प्रो. अवधेश प्रधान ने अपने वक्तव्य से सत्र को गरिमामय बनाया।

पंचम सत्र में पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान हुआ। 'हिंदी उपन्यास : रचनाविधान और विकासक्रम' पर मुख्य वक्तव्य प्रो. दिलीप सिंह ने दिया। इसके अतिरिक्त दो महत्त्वपूर्ण वक्तव्य प्रो. प्रभाकर सिंह, डॉ. इंदीवर के हुए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. श्रद्धानंद ने की और संयोजन डॉ. विजेन्द्र पाण्डेय ने किया। आयोजन का छठा सत्र '90 के बाद के हिंदी उपन्यास' पर केन्द्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अनंत मिश्र ने की। सत्र में प्रो. सुमन जैन, प्रो. मानवेन्द्र पाण्डेय, रामसुधार सिंह ने विस्तार के साथ अपनी बात रखी। सातवें अकादमिक सत्र का विषय था 'हिंदी उपन्यास और विभिन्न अस्मिताएँ'। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. नीरजा माधव ने की। डॉ. सुनील कुमार मानस ने स्त्री अस्मिता से जुड़े औपन्यासिक प्रयोगों की चर्चा की। डॉ. मनु पाण्डेय ने 'सूत्रधार', टी.पी.शुक्ला के आधार पर उपन्यासों की रचनात्मक व्यवस्था, वंदना मिश्रा ने थर्ड जेंडर संबंधी विमर्श की औपन्यासिक परिणति का मूल्यांकन प्रस्तुत किया। प्रो. भारती गोरे ने स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श की विस्तृत चर्चा की। सत्र का संयोजन प्रो. गोरखनाथ ने किया। आठवां सत्र समापन, संपूर्ति समारोह, स्मृति संवाद और पुरस्कार वितरण के रूप में आयोजित हुआ। सत्र में डॉ. मुक्ता, डॉ. शशिकला पाण्डेय ने स्मृति संवाद तथा प्रो. गोपबंधु मिश्र ने विषय के शास्त्रीय पक्ष पर अपनी बात रखी। अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र प्रताप ने की।

कला-प्रदर्शनी : पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस के अवसर पर 2014 से कलाप्रदर्शनी का आयोजन भी जुड़ गया है। जिसकी शुरुआत डॉ. राजकुमार सिंह ने की थी, जो अब दिवंगत हो चुके हैं। 2025 में कला प्रदर्शनी के अन्तर्गत कलाकार राजू गुप्ता के नेतृत्व में विद्याश्री न्यास के विभिन्न आयोजनों तथा पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्रों की प्रदर्शनी लगायी गयी।

पुस्तक-प्रदर्शनी : 2016 से राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी भी अनवरत आयोजित की जा रही है। इसी क्रम में 2025 में प्रदर्शनी के अन्तर्गत सेवक प्रकाशन, प्रलेक प्रकाशन, सोच-विचार पत्रिका एवं नान्दी पत्रिका आदि का स्टॉल लगाया गया।

सम्मान-समारोह : प्रतिवर्ष विद्याश्री न्यास द्वारा दिये जाने वाले सम्मान समारोह के अन्तर्गत 14 जनवरी 2025 को इस वर्ष के 'विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान श्रीयुत श्रीप्रकाश मिश्र को, लोककवि सम्मान डॉ. बलभद्र को, श्रीमती राधिका देवी लोककला सम्मान श्री रामजनम भारती को, पत्रकारिता सम्मान श्री राकेश कुमार शर्मा को तथा श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान श्री नरोत्तम शिल्पी को प्रदान किया गया।

युवा समवाय : इसके अन्तर्गत युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने हेतु कविता, आलेख, निबंध, कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कविता के लिए कांगो मादो, डॉ. फिरोज, कविता सरोज, अरसान अजीज और निवेदिता त्रिपाठी को, आलेख के लिए धनञ्जय मलिक और गुलजबीं अख्तर, क्षमता मिश्र और शिखा सिंह को, निबंध के लिए पूजा राय को पुरस्कृत किया गया।

सांस्कृतिक-कार्यक्रम : राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक शिविर के आयोजन के उद्घाटन-समारोह के अन्तर्गत रिदित मिश्र के तबला वादन, आयुष्मती आतुषी के वीणा वादन एवं प्रीतम मिश्र के गायन ने समारोह को एक विशिष्ट गरिमा प्रदान की।

चिकितुषी एवं अन्य प्रकाशनों का लोकार्पण : पं. विद्यानिवास मिश्र की जन्मशती के अवसर पर 14 जनवरी को उनपर केन्द्रित पुस्तक 'समवेत का सौन्दर्य' तथा उन पर केन्द्रित दो पत्रिकाओं क्रमशः 'सोच-विचार' एवं 'वीणा' का एकाग्र अंक उनका निबंध-संग्रह 'शिरीष का आग्रह' तथा न्यास के आयोजनों से सम्बन्धित 'पलास के फूल की दहक 'अज्ञेय', 'लोक, लोकतंत्र और मीडिया', 'हिंदी उपन्यासों की कथाभूमि' तथा दो अन्य पुस्तक 'रामकथा मंदाकिनी' और 'भारत-भारतीयता' का लोकार्पण हुआ।

पं. हरिराम द्विवेदी स्मृति काव्य संध्या : 14 जनवरी 2025 को प्रो. वशिष्ठ अनूप की अध्यक्षता एवं डॉ. अशोक सिंह के संचालन में कविगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें एक दर्जन से अधिक कवियों ने काव्य-पाठ किया।

प्रसाद का उपन्यास साहित्य : चिंतन के विविध आयाम : इस विषय पर संगोष्ठी महाकवि जयशंकर प्रसाद की जयंती पर 30 जनवरी 2025 को विद्याश्री न्यास एवं महाकवि जयशंकर प्रसाद ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय जिला पुस्तकालय, अर्दली बाजार में आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने की। प्रसाद के उपन्यास 'तितली' पर प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी ने, 'कंकाल' पर डॉ. रामसुधार सिंह ने तथा डॉ. इंदीवर ने 'इरावती' पर समीक्षात्मक व्याख्यान दिया। स्वागत विद्याश्री न्यास की ओर से डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

आधुनिक हिंदी कविता पर संगोष्ठी : पं. विद्यानिवास मिश्र की जन्म शताब्दी के अवसर 5 फरवरी 2025 को विद्याश्री न्यास एवं हिंदी विभाग, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में उदय प्रताप कॉलेज के राजर्षि सेमिनार हाल में 'आधुनिक हिंदी कविता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. दिलीप सिंह ने की। संगोष्ठी में 'स्वाधीनता के पूर्व हिंदी कविता' पर प्रसिद्ध कवि अष्टभुजा शुक्ल ने 'आजादी के बाद से लेकर 1990 तक' की हिंदी कविता पर प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार श्री प्रकाश मिश्र ने तथा '1990 के बाद की हिंदी कविता' पर प्रो. प्रभाकर सिंह ने विस्तार से चर्चा की। संगोष्ठी का संचालन प्रो. गोरखनाथ ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

संस्कृत कविगोष्ठी : विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि (14 फरवरी, 2025) को विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास एवं सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर 14 फरवरी 2025 को योग साधना केन्द्र सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रो. विंध्येश्वरी प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में संस्कृत कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पवन कुमार

शास्त्री, प्रो. चन्द्रकान्ता राय, प्रो. गायत्री प्रसाद पाण्डेय, प्रो. विवेक पाण्डेय, प्रो. कमला पाण्डेय आदि ने भावपूर्ण काव्यपाठ किया। आयोजन का संयोजन एवं संचालन प्रो. चन्द्रकान्ता राय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन-विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान : वर्ष 2025 के 'पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान' 14 फरवरी, 2025 को संस्कृत भाषा- साहित्य के विश्रुत विद्वान प्रो. गोपबंधु मिश्र को प्रदान किया गया।

पं. क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय स्मृति व्याख्यान : पं. विद्यानिवास मिश्र द्वारा स्थापित श्रद्धानिधि न्यास द्वारा संकल्पित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 14 फरवरी, 2025 को 'महाभारत की कथाभूमि' विषय पर प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी ने महाभारत संबंधी विमर्श के क्षेत्र में पं. विद्यानिवास मिश्र की रचना 'महाभारत का काव्यार्थ' के मूल्य और महत्त्व को स्थापित किया।

विद्यानिवास मिश्र : शताब्दी-स्मरण (कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता) : कोलकाता विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के तत्वावधान में 'विद्यानिवास मिश्र शताब्दी स्मरण' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन यूको बैंक के सौजन्य से 20 फरवरी 2025 को कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेट हाल में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. राजश्री शुक्ला ने की। स्वागत डॉ. रश्मि शुक्ला ने किया। संगोष्ठी सत्रों को डॉ. रश्मि पंडा मुखर्जी, डॉ. विजय कुमार साव और श्री अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने संबोधित किया। संगोष्ठी का संचालन पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. रामप्रवेश रजक ने किया।

हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं पर चर्चा : राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी तथा शास्त्रीय भाषाओं के बीच आवाजाही आवश्यक है। मातृभाषा दिवस पर विद्याश्री न्यास कार्यालय (अभिलाषा नगर कालोनी) में पं. विद्यानिवास मिश्र शताब्दी वर्ष में भारतीय भाषाओं के संदर्भ में पंडित जी की भारतीय भाषाओं से संदर्भित मौलिक अवधारणा पर 21 फरवरी, 2025 को एक संगोष्ठी हुई जिसमें प्रो. आर. चन्द्रशेखरन (निदेशक केन्द्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान, चेन्नई), उपनिदेशक भारतीय भाषा संस्थान मैसूर, डॉ. एन.आर. प्रेमकुमार, केन्द्रीय शास्त्रीय संस्थान, चेन्नई के डॉ. एम. गोविन्द राजन की विशेष उपस्थिति रही। 'काशी तमिल संगमम् में पधारे इन विद्वानों का स्वागत विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। संयोजन में उक्त विद्वानों के अतिरिक्त डॉ. रामसुधार सिंह, डॉ. प्रकाश उदय, प्रो. उदयन मिश्र, अरविंद कुमार पाण्डेय, सत्येन्द्र राम, वीरेन्द्र राम त्रिपाठी आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

भारत चिंतन पर संगोष्ठी : दिनांक 7 मार्च, 2025 को भारत चिंतन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अज्ञेय भारतीय संस्थान समिति, श्रद्धानिधि न्यास, कलावती देवी स्मृति न्यास, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजकीय बौद्ध संग्रहालय और विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में किया गया, जिसमें कलावती देवी स्मृति न्यास द्वारा अज्ञेय स्मृति सम्मान कवि कथाकार उदय प्रकाश को प्रदान किया गया। अज्ञेय स्मृति व्याख्यान अष्टभुजा शुक्ल ने किया। विभिन्न सत्रों में प्रो. चितरंजन मिश्र, अनंत मिश्र, अवधेश प्रधान, रामसुधार सिंह आदि ने भारत चिंतन के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यान दिया। उदय प्रकाश की अध्यक्षता में काव्य संध्या का आयोजन हुआ।

'हिंदी का विश्व प्रसार' विषयक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी : विद्याश्री न्यास की ओर से वाराणसी के नदेसर स्थित होटल मैजिक लीफ में 'हिंदी का विश्व प्रसार' विषयक अन्तरराष्ट्रीय परिचर्चा का 22 मार्च, 2025 को आयोजन हुआ। परिचर्चा में अमेरिका में हिंदी के शिक्षण-प्रशिक्षण में लगे लगभग पन्द्रह युवा सदस्यों ने हिंदी संस्थान अमेरिका के अध्यक्ष डॉ. अशोक ओझा के नेतृत्व में भाग लिया। अध्यक्षता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने की। सारस्वत अतिथि प्रो. मैब्रिएला निमोलावा ईलेवा ने कहा कि भाषा के आदान-प्रदान से दो राष्ट्रों के बीच सद्भाव और मैत्री की स्थापना होती है। विशिष्ट अतिथि प्रो. वशिष्ठ अनूप ने हिन्दी को भारत की आवाज बताया। विषय प्रवर्तन डॉ. रामसुधार सिंह ने किया।

शैल अग्रवाल का रचना-पाठ : साहित्यिक संघ, वाराणसी, राजकीय पुस्तकालय एवं विद्याश्री न्यास द्वारा इंग्लैण्ड की वरिष्ठ कवि कथाकार शैल अग्रवाल के रचना-पाठ पर केन्द्रित संगोष्ठी का 25 मार्च, 2025 को आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र प्रताप ने की। स्वागत करते हुए विद्याश्री न्यास के सविच डॉ. दयानिधि मिश्र ने शैल अग्रवाल को बनारस की बेटी बताया। शैल जी ने अपनी एक कहानी का पाठ किया तथा कुछ कविताएँ भी सुनाईं। डॉ. मुक्ता जी ने इनकी कहानियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीति जायसवाल तथा आभार-प्रदर्शन श्री नरेन्द्र मिश्र ने किया।

आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान : पं. विद्यानिवास मिश्र की जन्मशती के तहत 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान' मासिक पत्रिका 'वीणा' के संपादक और सुपरिचित लेखक राकेश शर्मा को इन्दौर में 1 अप्रैल, 2025 को समारोह पूर्वक प्रदान किया गया। इस अवसर पर पंडित विद्यानिवास मिश्र द्वारा चयनित तथा नर्मदा प्रसाद उपाध्याय द्वारा संपादित पुस्तक 'चयनित निबंध' का विमोचन भी किया गया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परम्परा (प्रथम पुष्प) : साहित्यिक संघ एवं विद्याश्री न्यास द्वारा 'हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा' के अन्तर्गत शृंखलाबद्ध व्याख्यानमाला के प्रथम पुष्प का आयोजन 29 अप्रैल, 2025 को राजकीय जिला पुस्तकालय में किया गया। प्रथम पुष्प में हिन्दू नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अवदान पर प्रो. अवधेश प्रधान तथा देवकीनन्दन खत्री के कृतित्व पर सुश्री अंशु प्रिया ने शोधपरक वक्तव्य प्रस्तुत किया। अध्यक्षता भारतेन्दु के वंशज श्री दीपेश चौधरी ने की।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (द्वितीय पुष्प) : साहित्यिक संघ एवं विद्याश्री न्यास द्वारा 28 मई, 2025 को आयोजित इस कार्यक्रम के द्वितीय पुष्प के रूप में तेग अली तेग तथा जगन्नाथ दास रत्नाकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार व्यक्त किया गया। प्रो. प्रकाश उदय ने तेग अली तेग पर तथा प्रो. वशिष्ठ अनूप ने रत्नाकर जी के सृजन-संसार पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र प्रताप ने की।

जन्मशती के अवसर पर साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का आयोजन : पं. विद्यानिवास मिश्र की जन्मशती के अवसर पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा 18 एवं 19 जून, 2025 को अकादमी के सभागार में पूज्य पंडित जी के कृतित्व के विभिन्न आयामों पर विस्तृत विमर्श देश के प्रतिष्ठित विद्वानों ने किया गया। 18 जून के उद्घाटन सत्र में अकादमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव तथा हिन्दी भाषा के संयोजक क्रमशः डॉ. माधव कौशिक, डॉ. कुमुद शर्मा, श्री के. श्रीनिवास राव तथा प्रख्यात कथाकार गोविन्द मिश्र ने पंडित जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला। अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा महात्मा गांधी केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने उद्घाटन एवं बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। दो दिनों के विभिन्न सत्रों में सर्वश्री दयानिधि मिश्र, नन्द किशोर आचार्य, वागीश शुक्ल, राधावल्लभ त्रिपाठी, विद्याबिंदु सिंह, रामदेव शुक्ल, श्याम सुन्दर दूबे, कृष्ण कुमार सिंह, माधव हाड़ा तथा ज्योतिष ज्योतिषी आदि ने अपने विचारों से संगोष्ठी को समृद्ध किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (तृतीय पुष्प) : 23 जून 2025 को इस शृंखला के तृतीय पुष्प के रूप में प्रो. प्रभात मिश्र ने श्यामसुन्दर दास तथा प्रसिद्ध कथा लेखिका डॉ. नीरजा माधव ने मल्लिका के अवदान का विस्तार से मूल्यांकन किया। अध्यक्षता प्रो. श्रद्धानंद ने तथा स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। संचालन डॉ. सविता श्रीवास्तव ने किया।

भारतीय भाषाओं की एकता पर चर्चा : विद्याश्री न्यास कार्यालय में विद्यानिवास मिश्र शताब्दी वर्ष में भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में पंडित जी की वैश्विक अवधारणा पर एक संगोष्ठी का आयोजन 23 जुलाई, 2025 को किया गया। संगोष्ठी में मराठी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक विश्वास पाटिल, इतिहासविद् एवं फिल्म निर्माता आशुतोष पाठक तथा एम.जी. निकम की उपस्थिति विशेष रही। विद्वानों का स्वागत करते हुए डॉ. दयानिधि मिश्र ने पंडित जी के भारतीय भाषाओं से संदर्भित विचारों का उल्लेख किया। श्री विश्वास पाटिल ने अपने प्रतिनिधि उपन्यासों की सृजन-प्रक्रिया तथा हिंदी में उनकी लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। डॉ. रामसुधार सिंह ने पाटिल के सृजन-संसार का परिचय दिया। संचालन प्रो. उदयन मिश्र तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ऋतंधर मिश्र ने किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (चतुर्थ पुष्प) : चतुर्थ पुष्प का आयोजन 30 जुलाई, 2025 को साहित्यिक संघ तथा विद्याश्री न्यास द्वारा राजकीय जिला पुस्तकालय में किया गया। चर्चा के केन्द्र में इस बार शिव प्रसाद सितारेहिंद तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रहे। शिव प्रसाद सितारेहिंद पर प्रो. प्रभाकर सिंह ने तथा रामचन्द्र शुक्ल पर प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने अपने विचारों को रखा। अध्यक्षता प्रसिद्ध कथा-लेखिका डॉ. मुक्ता ने की।

धर्म : जीवन में सनातन राग : भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, भारत अध्ययन केन्द्र, वाराणसी, लाल बहादुर पी.जी. कालेज, चंदौली और विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी 11-13 अगस्त, 2025 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भारत अध्ययन केन्द्र में आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया मिथिलेश नंदिनी शरण, अयोध्या ने। वक्तव्य श्री सच्चिदानंद मिश्र ने और अध्यक्षीय वक्तव्य दिया काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने। बीज वक्तव्य प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने दिया। इस अवसर पर डॉ. दयानिधि मिश्र द्वारा संपादित पुस्तक 'धर्म : जीवन में सनातन राग' का लोकार्पण हुआ। विभिन्न सत्रों में श्यामसुन्दर दूबे, धनंजय मणि त्रिपाठी, लक्ष्मी मिश्र, अनंत मिश्र, सदाशिव कुमार द्विवेदी, माधव जनार्दन रटाटे, ज्ञानेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, गायत्री प्रसाद पाण्डेय, संतोष कुमार शुक्ल आदि ने व्याख्यान प्रस्तुत किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (पंचम पुष्प) : इस शृंखला के पंचम पुष्प के रूप में 31 अगस्त, 2025 को बंग महिला पर डॉ. मुक्ता तथा प्रेमचंद पर प्रो. बलराज पाण्डेय द्वारा सुचिंतित वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रामसुधार सिंह ने की। स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री नरेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

''राष्ट्रीय शिक्षानीति : चुनौतियाँ और समस्याएँ : राष्ट्रीय शिक्षानीति : चुनौतियाँ और समस्याएँ विषय पर 26-27 सितम्बर, 2025 को संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, विद्याश्री न्यास, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और लाल बहादुर शास्त्री पी.जी. कालेज, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में विद्वान वक्ताओं ने विषय के विभिन्न आयामों को उद्घाटित किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (षष्ठ पुष्प) : साहित्यिक संघ और विद्याश्री न्यास द्वारा 28 सितम्बर, 2025 को आयोजित इस शृंखलाबद्ध कार्यक्रम के छठे पुष्प के रूप में जयशंकर प्रसाद के साहित्य पर डॉ. कमलेश वर्मा तथा शिवरानी देवी के अवदान पर डॉ. शुभा श्रीवास्तव ने अपने विचार रखे। अध्यक्षता डॉ. इंदीवर ने की।

उज्जैन में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन : सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन की हिंदी अध्ययनशाला में प्रख्यात साहित्य मनीषी आचार्य विद्यानिवास मिश्र जन्मशती के अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 11 अक्टूबर, 2025 को किया गया। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कलामनीषी एवं ललित निबंधकार श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, इंदौर थे। सारस्वत अतिथि प्रो. करुणा शंकर उपाध्याय, मुम्बई एवं श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल शरद आलोक, नार्वे थे। अध्यक्षता कुलानुशासक प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो. गीता नायक, प्रो. जगदीश चंद्र शर्मा, उज्जैन, डॉ. सी.एल. शर्मा रतलाम ने भी अपने विचार व्यक्त किये। वक्ताओं ने कहा कि मिश्र जी पूरे हिंदी साहित्य में इकलौते अन्तरानुशासनिक व्यक्ति हैं, जिनमें साहित्य, कला और जीवन अनुस्यूत है। संचालन शोधार्थी संगीता मिर्धा ने किया एवं आभार प्रदर्शन प्रो. गीता नायक ने किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (सप्तम पुष्प) : इस आयोजन के सप्तम पुष्प के रूप में 30 अक्टूबर, 2025 डॉ. प्रीति त्रिपाठी ने बेरुब बनारसी तथा प्रो. श्रद्धानंद ने अन्नपूर्णानंद के सृजनकर्म पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये। अध्यक्षता डॉ. शशिकला पाण्डेय ने की। स्वागत दयानिधि मिश्र तथा धन्यवाद प्रकाश नरेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

विद्यानिवास मिश्र के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक-सांस्कृतिक बोध : बी.के. बिड़ला महाविद्यालय कल्याण, आर.सी.एस.एस.आर., दिल्ली तथा महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई और अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संयुक्त तत्वावधान में 21-22 नवम्बर, 2025 को 'विद्यानिवास मिश्र के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक-सांस्कृतिक शोध' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्घाटन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अविनाश पाटील ने स्वागत किया। मुख्य अतिथि महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो. शीतला प्रसाद दूबे थे। इस आयोजन में प्रसिद्ध ललित निबंधकार डॉ. श्रीराम परिहार, प्रो. हूबनाथ पाण्डेय, डॉ. उर्मिला सिंह, सुरेश ऋतुपर्ण सहित बड़ी संख्या में विद्वतजन की उपस्थिति रही।

भारत बोध : स्वरूप एवं विविध आयाम : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, अन्तःसांस्कृतिक केन्द्र तथा विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में 17-18 नवम्बर 2025 को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में 'भारत बोध : स्वरूप एवं विविध आयाम' पर विस्तार से चर्चा हुई। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय तथा अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार डॉ. अच्युतानंद मिश्र थे। विविध सत्रों में राकेश मंजुल, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, रामसुधार सिंह, प्रकाश उदय, सुप्रिया पाठक, कृष्णकांत शर्मा आदि ने अपने व्याख्यान से सत्रों को समृद्ध किया। बीज वक्तव्य डॉ. दयानिधि मिश्र ने तथा स्वागत रमेशचन्द्र गौड़ ने किया।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (अष्टम पुष्प) : इस शृंखला के अष्टम पुष्प के रूप में 29 नवम्बर, 2025 को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई राधाकृष्णदास पर हिमांशु उपाध्याय ने, रामकृष्णदास के योगदान पर प्रो. प्रीति जायसवाल ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किए। अध्यक्षता प्रसिद्ध नवगीतकार श्री ओम धीरज ने की।

हिंदी की धरोहर : काशी की सृजन-परंपरा (नवम पुष्प) : शृंखला के नवम पुष्प के अन्तर्गत 31 दिसम्बर, 2025 को प्रसिद्ध नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र पर शोध छात्र सर्वेश मिश्र द्वारा तथा वासुदेव शरण अग्रवाल पर ऋषभ पाण्डेय द्वारा शोधपूर्ण आख्यान प्रस्तुत किया गया। अध्यक्षता डॉ. अत्रि भारद्वाज ने की। स्वागत डॉ. रामसुधार सिंह ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन नरेन्द्रनाथ मिश्र ने किया। संचालन अंजलि मिश्र ने किया।

शताब्दी स्मरण : 10 जनवरी 2026 को श्री बड़ा बाजार, कुमार सभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में उसके पुस्तकालय कक्ष में पं. विद्यानिवास मिश्र के लालित्य, लोकज्ञान परम्परा पर एक गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें प्रमुख रुप से सर्वश्री योगेश राज उपाध्याय, शशिभूषण एवं अजेन्द्र नाथ त्रिवेदी आदि ने विचार व्यक्त किये।

विद्याश्री न्यास द्वारा 2026 में सम्मानित होने वाली विभूतियाँ तथा स्मृति व्याख्यान के वक्ता

आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान

डॉ. मयंक मुरारी

आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान

डॉ. जयप्रकाश मिश्र

श्रीमती राधिका देवी लोककला सम्मान

श्रीमती संतोष श्रीवास्तव

श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान

डॉ. अमिता दुबे

आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान

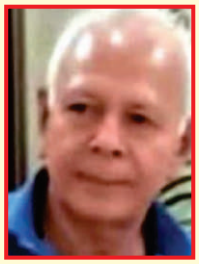

डॉ. अत्रि भारद्वाज

अरुणेश नीरन भोजपुरी वैभव सम्मान

प्रो. रामदेव शुक्ल

आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान

प्रो. रामजी तिवारी

आचार्य विद्यानिवास मिश्र जन्मशती सम्मान 2026 से सम्मानित होने वाली विभूतियाँ

डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा

डॉ. मुक्ता

श्री ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी 'शैलेश'

श्री कवीन्द्र नारायण श्रीवास्तव

श्री कंचन सिंह 'परिहार'

श्री ज्ञानेश्वर नाथ शर्मा

श्री मनीष खत्री

पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक एवं पत्रिकाएँ

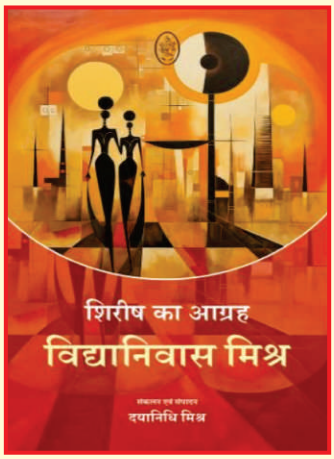

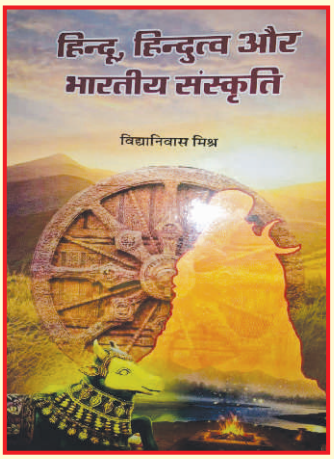

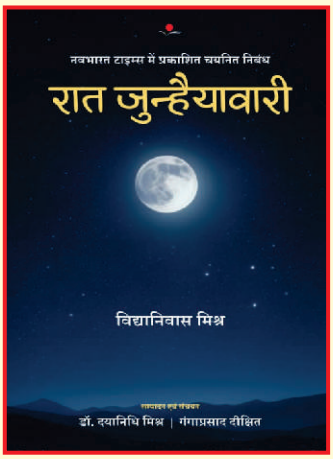

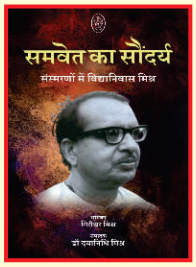

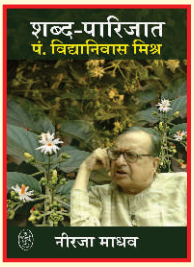

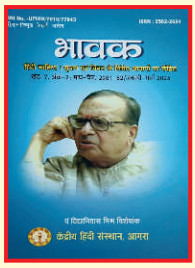

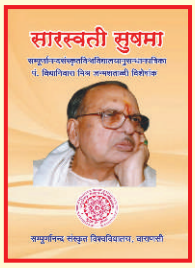

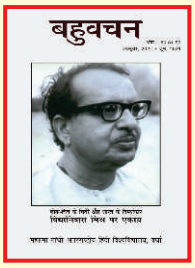

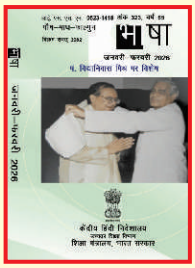

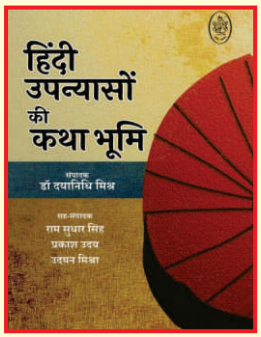

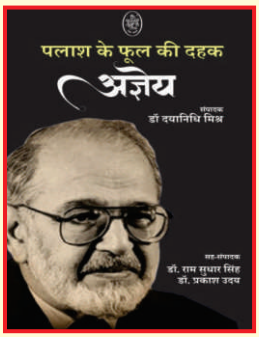

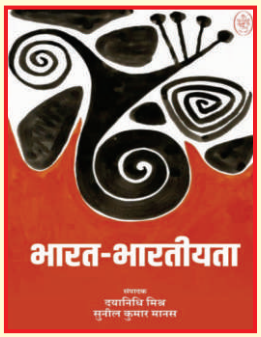

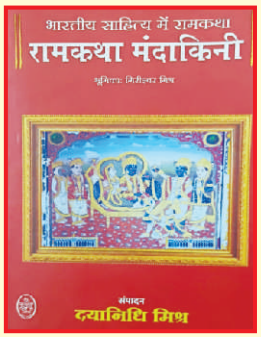

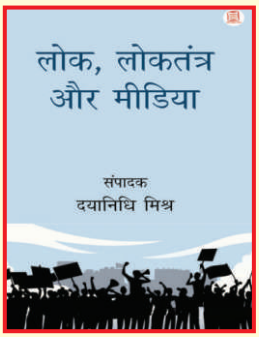

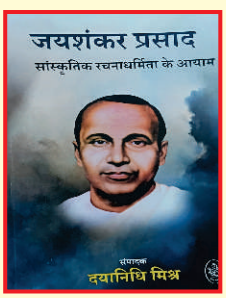

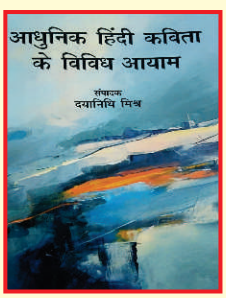

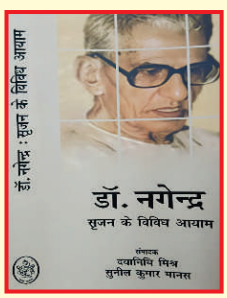

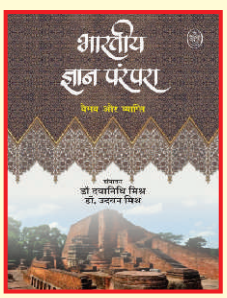

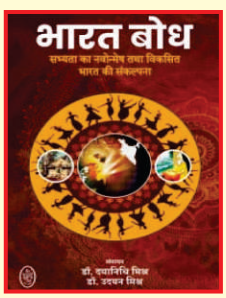

पं. विद्यानिवास मिश्र : जन्मशताब्दी वर्ष के विविध आयोजन

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक शिविर
14–16 जनवरी, 2025

कला/पुस्तक प्रदर्शनी
14–16 जनवरी, 2025

जन्मशती वर्ष के कैलेण्डर का लोकार्पण
14–16 जनवरी, 2025

सम्मान समारोह
14 जनवरी, 2025

युवा समवाय : पुरस्कार–वितरण,
2025

सांस्कृतिक कार्यक्रम
14–16 जनवरी, 2025

पुस्तकों–पत्रिकाओं का लोकार्पण
14 जनवरी, 2025

पं. हरिराम द्विवेदी स्मृति काव्य–संध्या
14 जनवरी, 2025

जयशंकर प्रसाद : साहित्य संस्कृति महोत्सव
30 जनवरी, 2025

आधुनिक हिन्दी कविता पर संगोष्ठी
6 फरवरी, 2025

संस्कृत कवि–गोष्ठी
14 फरवरी, 2025

रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान
14 फरवरी, 2025

क्षेत्रेष चन्द्र चट्टोपाध्याय स्मृति व्याख्यान
14 फरवरी, 2025

विद्यानिवास मिश्र : शताब्दी स्मरण, कोलकाता
विश्वविद्यालय, 20 फरवरी, 2025

हिन्दी और दक्षिण भारतीय भाषाओं पर परिचर्चा
21 फरवरी, 2025

पं. विद्यानिवास मिश्र : जन्मशताब्दी वर्ष के विविध आयोजन

भारत चिंतन पर संगोष्ठी
7 मार्च, 2025

हिन्दी का विश्व प्रसार पर अन्तर्राष्ट्रीय परिचर्चा, 22 मार्च, 2025

शैल अग्रवाल का रचना–पाठ
25 मार्च, 2025

इन्दौर में कार्यक्रम
1 अप्रैल, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(प्रथम पुष्प) 29 अप्रैल, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(द्वितीय पुष्प) 28 मई, 2025

साहित्य अकादमी द्वारा संगोष्ठी
18–19 जून, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(तृतीय पुष्प) 23 जून, 2025

भारतीय भाषाओं की एकता पर परिचर्चा
23 जुलाई, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(चतुर्थ पुष्प) 30 जुलाई, 2025

धर्म : जीवन में सनातन राग
11–14 अगस्त, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(पंचम पुष्प) 31 अगस्त, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(षष्ठ पुष्प) 28 सितम्बर, 2025

उज्जैन में हुई अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
11 अक्टूबर, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(सप्तम पुष्प) 30 अक्टूबर, 2025

भारत बोध : स्वरुप एवं विविध आयाम
17–18 नवम्बर, 2025

मुम्बई में हुई संगोष्ठी
21–22 नवम्बर, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(अष्टम पुष्प) 29 नवम्बर, 2025

हिन्दी की धरोहर : काशी की सृजन परम्परा
(नवम पुष्प) 31 दिसम्बर, 2025